

डॉ. अनिता कुमारी
वरिय वैज्ञानिक एवं प्रधान

अरहर में खरपतवार नियंत्रण

डॉ० पवन कुमार
क्रि० प्र० वि० (क्रीट विज्ञान)
सुश्री स्याति कुमारी
क्रि० प्र० वि० (जस्य विज्ञान)

अरहर भारत की महत्वपूर्ण दलहन फसल है

तथा क्षेत्रफल और उत्पादन के आधार पर चना के बाद इसका दूसरा स्थान है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक व तमिलनाडु भारत के प्रमुख अरहर उत्पादक राज्य हैं।

उन्नतशील प्रजातियाँ	राजेन्द्र अरहर-1, राजेन्द्र अरहर-2, पूसा-9, पूसा-2001, पूसा अरहर-16 इत्यादि।
बुआई का समय	शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की बुआई जून के प्रथम पखवाड़े तथा मध्यम देर से पकने वाली प्रजातियों की बुआई जून के द्वितीय पखवाड़े में करना चाहिए।
भूमि का चुनाव	अच्छे जलनिकास व उच्च उर्वरता वाली दोमट भूमि सर्वोत्तम रहती है। खेत में पानी का ठहराव फसल को भारी हानि पहुँचाता है।
खेत की तैयारी	मिट्टी पलट ढल से एक गहरी जुताई के उपरान्त 2-3 जुताई ढल अथवा हरो से करना उचित रहता है।
उर्वरक	मृदा परीक्षण के आधार पर समस्त उर्वरक अन्तिम जुताई के समय ढल के पीछे कूड़ में बीज की सतह से 2 से०मी० गहराई व 5 से०मी० साइड में देना सर्वोत्तम रहता है। प्रति हेक्टर 15-20 कि०ग्रा० नाइट्रोजन 50 कि०ग्रा० फास्फोरस, 20 कि०ग्रा० पोटेश व 20 कि०ग्रा० गंधक का प्रयोग करने पर अधिक उपज प्राप्त होती है।
बीजशोधन	मृदाजनित रोगों से बचाव के लिए बीजों को 2 ग्राम की दर से शोधित करके बुआई करें। बीजशोधन बीजोपचार से 2-3 दिन पूर्व करें।
बीजोपचार	10 कि०ग्रा० अरहर के बीज के लिए राइजोबियम कल्चर का एक पैकेट पर्याप्त होता है। 50 ग्रा० गुड़ या चीनी को ½ ली० पानी में घोलकर उबाल लें। घोल के ठंडा होने पर उसमें राइजोबियम कल्चर मिला दें। इस कल्चर में 10 कि०ग्रा० बीज डाल कर अच्छी प्रकार मिला लें ताकि प्रत्येक बीज पर कल्चर का लेप चिपक जाये। उपचारित बीजों को छाया में सुखा कर, दूसरे दिन बोया जा सकता है।
दूरी	पंक्ति से पंक्ति : 45-60 से०मी० / पौधा से पौधा : 10-15 से०मी० (शीघ्र पकने वाली)
बीजदर	12-15 कि० ग्रा० प्रति हे०।
सिंचाई एवं जल निकास	चूँकि फसल असिंचित दशा में बोई जाती है अतः लम्बे समय तक वर्षा न होने पर पुष्पीकरण पूर्व अवस्था तथा दाना बनते समय फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। उच्च अरहर उत्पादन के लिए खेत में उचित जलनिकास का होना आवश्यक है अतः निचले एवं अधो जल निकास की समस्या वाले क्षेत्रों में मेड़ों पर बुआई करना उत्तम रहता है।
अरहर में खरपतवार नियंत्रण	अरहर की फसल की वटवार शुरु में कम होती है और प्रथम 60 दिनों में खेत में खरपतवार की मौजूदगी फसल उत्पादकता के लिए नुकसानदायक होती है। अतः बुवाई के एक महीने के अन्दर एक निकाई आवश्यक होती है एवं द्वितीय 45-60 दिन बाद। इससे खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के साथ-साथ मृदा में हवा के संचार में वृद्धि होने से फसल एवं सह-जीवाणुओं की वृद्धि हेतु अनुकूल वातावरण तैयार होता है। अरहर की फसल में खरपतवार नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है क्योंकि खरपतवार फसल के साथ पोषक तत्व, नमी और प्रकाश के लिए प्रतियोगिता करते हैं जिससे उपज में भारी कमी आ सकती है।

1. प्रमुख खरपतवार

अरहर की फसल में उगने वाले मुख्य खरपतवार इस प्रकार हैं :

- | | |
|---------------------------------------|-----------------------------------|
| क) चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार | ख) संकरी पत्ती वाले खरपतवार |
| ★ बथुआ (Chenopodium album) | ★ दूब (Cynodon dactylon) |
| ★ मोथा (Cyperus rotundus) | ★ मोथा (Cyperus iria) |
| ★ कृश्ननील (Ageratum conyzoides) | ★ सांवा घास (Echinochloa colonum) |
| ★ गाजर घास (Parthenium hysterophorus) | |

2. खरपतवारनियंत्रण के उपाय

क) यांत्रिक नियंत्रण

- ★ पहली निराई-गुड़ाई: बुवाई के लगभग 20-25 दिन बाद ।
- ★ दूसरी निराई-गुड़ाई: 45-50 दिन बाद करें ।
- ★ पंक्तियों में बुवाई करने पर कलटीवेटर या वीडर से आसानी से किया जा सकता है ।

ख) रासायनिक नियंत्रण

खरपतवारनाशी	मात्रा (ग्राम/लीटर प्रति हेक्टेयर)	प्रयोग का समय	विधि
पेन्डीमिथलीन 30% ईओ सीओ	3.3 लीटर/हे	बुवाई के 0-3 दिन के अंदर	500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
इमेजाथार्डपर 10% एसओ एलओ	1.0 लीटर/हे	बुवाई के 20-25 दिन बाद	500 लीटर पानी में घोलकर छिड़के।

छिड़काव के समय मिट्टी में पर्याप्त नमी होनी चाहिए और बारिश की संभावना न हो।

3. समेकित खरपतवार प्रबंधन

दीर्घकालीन अरहर की 2 पंक्तियों के बीच ज्वार, मक्का, बाजरा, तिल मूंगफली, मूँग अथवा उर्द की अन्तः फसल ली जा सकती है। यह आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है तथा प्राकृतिक प्रतिकूल परिस्थितियों से बचाव भी प्रदान करती है।

- ★ स्वस्थ बीज व उचित दूरी (45-60 से.मी.) पर बुवाई करें ।
- ★ खेत की अच्छी तैयारी और सिंचाई प्रबंधन से खरपतवारों की संख्या कम होती है ।
- ★ रासायनिक और यांत्रिक विधियों का संयुक्त उपयोग सर्वोत्तम परिणाम देता है ।

कटाई एवं मड़ाई

80 प्रतिशत फलियों के पक जाने पर फसल की कटाई गड़ासे या हँसिया से 10 से0मी0 की उँचाई पर करना चाहिए। तत्पश्चात फसल को सूखने के लिए बण्डल बनाकर फसल को खलिहान में ले आते हैं। फिर चार से पाँच दिन सुखाने के पश्चात पुलमैन श्रेषर द्वारा या लकड़ी के लट्ठे पर पिटाई करके वानो को भूसे से अलग कर लेते हैं।

उपज एवं भण्डारण

उन्नत विधि से खेती करने पर 15-20 क्विंटल प्रति हे0 दाना एवं 50-60 क्विंटल लकड़ी प्राप्त होती है। भण्डारण हेतु नमी का प्रतिशत 10-11 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।



कृषि विज्ञान केन्द्र, सबौर, भागलपुर

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर - 813210

ईमेल - bhagalpurkvk@gmail.com



नवीनतम कृषि फिल्मों को देखने के लिए हमारा यूट्यूब चैनल को सब्सक्राइब करें।

/bausabour

किसान हेल्प लाइन 1800 3456 455 (टोल फ्री)

बी.ए.यू. एगो डॉक्टर 700452883

आपका अपना रेडियो स्टेशन

Green 90.8FM

अब मोबाइल पर उपलब्ध

